IJMRSETM

e-ISSN: 2395 - 7639

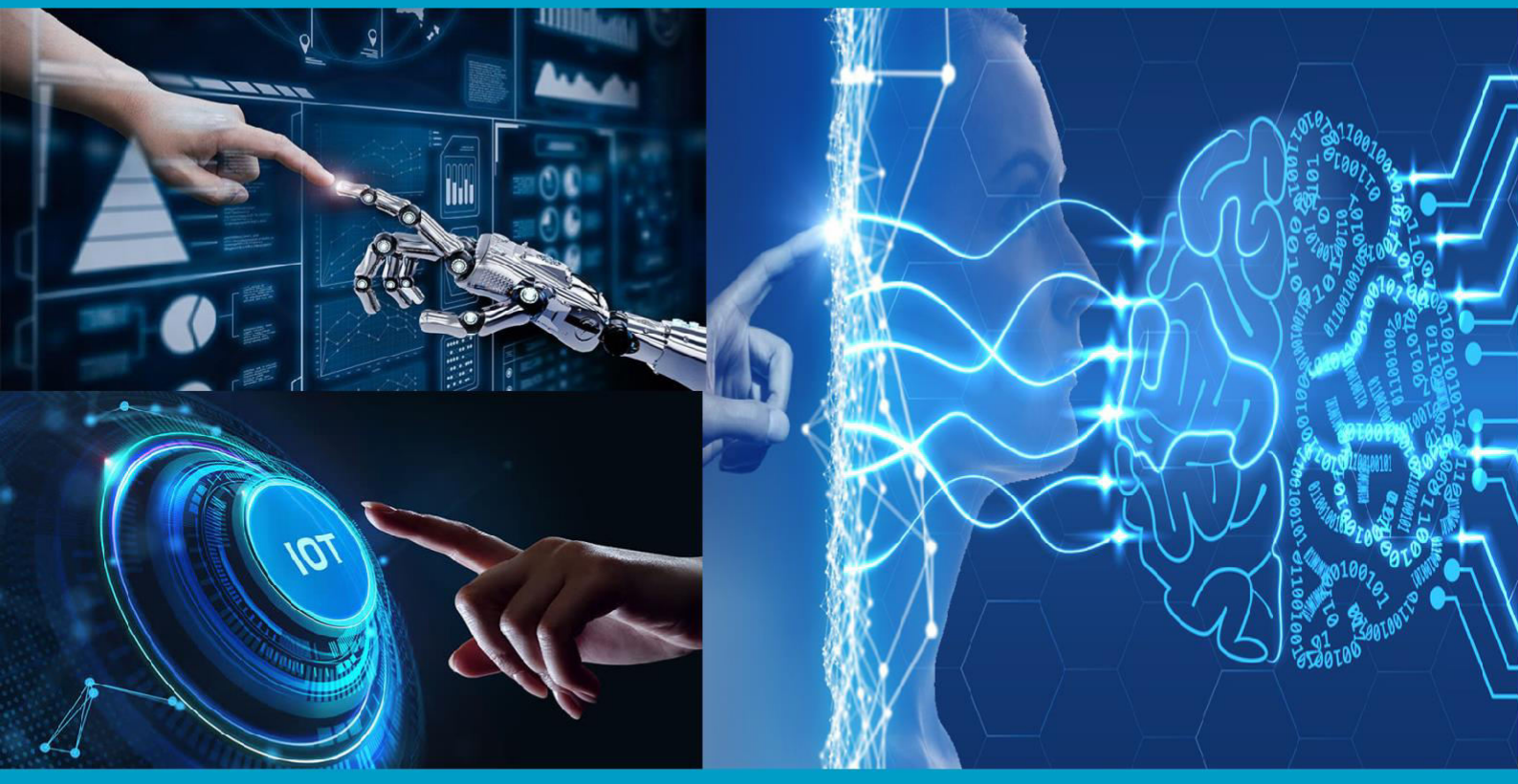

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH

IN SCIENCE, ENGINEERING, TECHNOLOGY AND MANAGEMENT

Volume 11, Issue 6, June 2024

INTERNATIONAL STANDARD SERIAL NUMBER INDIA

Impact Factor: 7.802

International Journal of Multidisciplinary Research in Science, Engineering, Technology & Management (IJMRSETM)

| ISSN: 2395-7639 | www.ijmrsetm.com | Impact Factor: 7.802 | A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Journal |

| Volume 11, Issue 6, June 2024 |

आधुनिक भारत में अशोक की धम्म नीति का महत्व

Praveen

B.Sc., M.A., Department of History, B.Ed., NET, Pali, Rajasthan, India

सार: धम्म शब्द संस्कृत के शब्द धर्म का पालि रूप है। प्राचीन भारतीय ग्रन्थों में 'धर्म' और उसके लक्षणों पर विशद चर्चा है। इतना ही नहीं, 'परम धर्म' (सबसे बड़ा धर्म) पर भी मुनियों ने अपने-अपने विचार दिये हैं। सम्राट अशोक की धम्म नीति को समझने का सबसे अच्छा उपाय उनके शिलालेखों को पढ़ना है, जो पूरे साम्राज्य में उस समय के लोगों को धर्म के सिद्धांतों को समझाने के लिए लिखे गए थे।[1][2][3]

कतव्य मते हि मे सर्वलोकहितं तस च पुन एस मूले उस्टानं च अथ-संतोरणा च नास्ति हि कंमतरं सर्वलोकहितत्पा य च किंति पराक्रमामि अहं किंतु भूतानं आनंणं गछेयं इध च नानि सुखापयामि परत्रा च स्वगं आराधयंतु

—छठा प्रमुख शिलालेख, अशोक महान[4]

राजकार्य मे मैं कितना भी कार्य करूँ, उससे मुझको संतोष नहीं होता। क्योंकि सर्वलोकहित करना ही मैंने अपना उत्तम कर्त्तव्य माना है एवं यह उद्योग और राजकर्म संचालन से ही पूर्ण हो सकता है। सर्वलोकहित से बढ़कर दूसरा कोई अच्छा कर्म नहीं है। मैं जो भी पराक्रम करता हूँ वह इसलिए है ताकि मैं जीवमात्र का जो मुझपर ऋण है उससे मुक्त होऊँ और यहाँ इस लोक में कुछ प्राणियों को सुखी करूँ और अन्यत्र परलोक मे वे स्वर्ग को प्राप्त करें।

I. परिचय

अशोक के धम्म के प्रधान लक्षण ये हैं : पापहीनता, बहुकल्याण, आत्मनिरीक्षण, अहिंसा, सत्य बोलना, धर्मानुशासन, धर्ममंगल, कल्याण, दान, शौच, संयम, भाव शुद्धि, कृतज्ञता, सहिष्णुता, बड़ों का आदार करना, नैतिक आचरण।

डाॅ. स्मिथ और डाॅ. राधाकुमुद मुकर्जी के मतानुसार अशोक का धम्म सार्वकालिक, सार्वभौम और सार्वजनिक धर्म था क्योंकि उसमे सभी धर्मों के समान सिद्धान्तों का वर्णन है। अशोक सर्वत्र " धम्म " का प्रचार-प्रसार करना चाहता था क्योंकि उसमे सभी धर्मों का सार विद्यमान था। वस्तुतः अशोक का धर्म मानवीय भावनाओं से ओत-प्रोत था। डाॅ. रमाशंकर त्रिपाठी के अनुसार," जिस धर्म का स्वरूप उसने संसार के सम्मुख उपस्थित किया वह सभी सभी सम्मानित नैतिक सिद्धांतों तथा आचरणों का संग्रह है। उसने जीवन को सुखी तथा पवित्र बनाने के उद्देश्य से कुछ आन्तरिक गुणों तथा आचरणों का विधान किया है। अशोक महान का धर्म संकीर्णता तथा साम्प्रदायिकता से मुक्त था।" शिलालेक विशेषज्ञ फ्लीट के अनुसार ", अशोक का धर्म बौद्ध धर्म नही बल्कि राजधर्म (राजाज्ञा) था।"[1,2,3]

अशोक अपने दूसरे तथा सातवें स्तंभ लेखो मे धम्म की व्याख्या इस प्रकार करता है--

धर्म है साधुता, बहुत से अच्छे कल्याणकारी कार्य करना, कोई पाप न करना, मृदुता, दूसरों के प्रति व्यावहार मे मधुरता, दया, दान तथा शुचिता। धर्म है प्राणियों का वध न करना किसी भी प्रकार की जीव हिंसा न करना, माता-पिता तथा बड़ों की आज्ञा मानना। गुरूजनों के प्रति आदर, मित्र, परिचितों, संबंधियों, ब्राह्मण तथा श्रमणों के प्रति दानशीलता तथा उचित व्यवहार और दास तथा भृत्यों के प्रति उचित व्यवहार करना।

कलिंग युद्ध के बाद मौर्य साम्राज्य का विस्तार और उत्खनन से प्राप्त अभिलेख वा स्तूप
अशोक के शिलालेखों में प्रकाशित धम्म नीति

अशोक के शिलालेखों का वितरण[5]
अशोक ने अपने शिलालेखों के माध्यम से अपनी धम्म नीति को उजागर किया। इन शिलालेखों पर धम्म के बारे में अपने विचार को व्यक्त कर अशोक ने अपनी प्रजा से सीधे संवाद करने का प्रयास किया। ये शिलालेख उनके जीवन के विभिन्न वर्षों में लिखे गए थे। शिलालेखों को दो श्रेणियों में विभाजित किया जा गया है। शिलालेखों के अध्ययन से पता चलता है कि अशोक बौद्ध धर्म के अनुयायी थे। ये शिलालेख अशोक के बौद्ध संप्रदाय के साथ संबंधों की घोषणा करते हैं। अन्य श्रेणी के शिलालेखों को प्रमुख और लघु शिलालेखों के रूप में जाना जाता है,

| ISSN: 2395-7639 | www.ijmrsetm.com | Impact Factor: 7.802 | A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Journal |

| Volume 11, Issue 6, June 2024 |

प्रमुख शिलालेख १ पशु बलि पर प्रतिबंध लगाने का उल्लेख है।
प्रमुख शिलालेख २ सामाजिक कल्याण के उपायों से संबंधित है। इसमें मनुष्यों और जानवरों के लिए चिकित्सा उपचार, सड़कों, कुओं और वृक्षारोपण के निर्माण का उल्लेख है।
प्रमुख शिलालेख ३ घोषित किया गया है कि ब्राह्मणों और श्रमिकों के प्रति उदारता एक गुण है, और अपने माता-पिता का सम्मान करना एक अच्छा गुण है।[4,5,6]
प्रमुख शिलालेख ४ में उसके शासनकाल के बारहवें वर्ष में पहली बार धम्म-महामत्त की नियुक्ति का उल्लेख है। इन विशेष अधिकारियों को राजा द्वारा सभी संप्रदायों और धर्मों के हितों की देखभाल करने और धम्म का संदेश फैलाने के लिए नियुक्त किया गया है।
प्रमुख शिलालेख ५ धम्म-महामहत्तों के लिए एक निर्देश है। उनसे कहा गया है कि वे किसी भी समय राजा के पास अपनी याचिका ला सकते हैं। और आदेश का दूसरा भाग त्वरित प्रशासन और सुचारु व्यापार के लेन-देन से संबंधित है इत्यादि।
प्रमुख शिलालेख ६ सभी संप्रदायों के बीच सहिष्णुता की अपील है। आदेश से ऐसा प्रतीत होता है कि संप्रदायों के बीच तनाव शायद खुले विरोध का माहौल था। यह याचिका एकता बनाए रखने की समग्र रणनीति का एक हिस्सा है।
शिलालेखों के आधार पर अशोक के धम्म के सिद्धांत, शिक्षाएं या विशेषताएं निम्नलिखित हैं-

(१) अशोक का धम्म धर्म के मूल तत्वों से युक्त है। अशोक ने वैदिक धर्म के मूल तत्वों को सदा याद रखा। जैसे-- दया, करूणा, क्षमा, धृति, शौच इत्यादि बौद्ध और जैन धर्म मे भी यह मूल तत्व है।

(२) नैतिकता और सदाचरण अशोक के धम्म के मूल आधार हैं।

(३) अशोक के धम्म मे दूसरो के विचारों, विश्वासों, आस्था, नैतिकता और जीवन प्रणाली के प्रति सम्मान और सहिष्णुता रखने को विशेष रूप से कहा गया है।

(४) अशोक के धम्म मे अहिंसा को अत्यधिक महत्व दिया गया है किसी जीव को न मारना, किसी जीव को न सताना साथ ही अपशब्द न बोलना, किसी का बुरा न चाहना और पशु-पक्षी, मानव, वृक्ष आदि की रक्षा करना और इसके लिये कार्य करना भी अहिंसा है।

(५) ब्राह्मणों श्रमणों को दान, वृद्धों और दुखियों की सेवा तथा सम्बन्धियों, बन्धु बान्धवों, हितैषियों और मित्रों के प्रति स्नेहपूर्ण व्यवहार होना चाहिए।

(६) अशोक के धम्म का एक आर्दश है मानव को भावनाओं की शुद्धता तथा पवित्रता के लिए साधुता, बहु कल्याण, दया, दान, सत्य, संयम, कृतज्ञता तथा माधुर्यपूर्ण करना है।

(७) हितैषियों और मित्रों के प्रति स्नेहपूर्ण व्यवहार करना।[7,8,9]

(८) अशोक के धम्म का एक सिद्धांत सेवक तथा श्रमिकों के साथ सद्व्यवहार करना है।

(९) अशोक के धर्म की मुख्य विशेषता लोक कल्याण है। धम्म मंगल अर्थात् प्राणिमात्र की रक्षा और विकास के लिये कार्य करना। विलासी जीवन से दूर रहना, मांस भक्षण न करना, वृक्षों को न काटना आदि लोक कल्याण के अंतर्गत ही माने जाते है।

(१०) अशोक के धम्म की एक विशेषता यह है कि अशोक का धम्म सार्वभौमिक है, प्रत्येक स्थान पर प्रत्येक व्यक्ति, प्रत्येक समय मे धम्म का पालन कर सकता है।

(११) अल्प व्यय (कम खर्च) अल्प संग्रह (कम जोड़ना) करना चाहिए।

(१२) निष्ठुरता, क्रोध, अभिमान, ईर्ष्या दुर्गुणों से दूर रहकर कम से कम पाप करना चाहिए।

अशोक महान द्वारा प्रतिपादित धार्मिक विचार सार्वभौमिक, सहिष्णुतापूर्ण, दार्शनिक, पक्षविहीन, व्यावहारिक, अहिंसक तथा जीवन मे नैतिक आचरण के पालन को महत्व देने वाले थे।

अशोक की धार्मिक नीति
सम्राट अशोक सभी प्रजा से पितातुल्य व्यवहार करते थे, उनके सम्प्रदाय को बिना ध्यान दिए[6] :
“
“मुनिसे पजा ममा [।] अथा पजाये इछामि हकं किंति सवेन हितसुखेन हिदलोकिक- पाललोकिकेन यूजेवू ति तथा [सव] मुनिसेसु पि इछामि हकं [।]”

| ISSN: 2395-7639 | www.ijmrsetm.com | Impact Factor: 7.802 | A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Journal |

| Volume 11, Issue 6, June 2024 |

— पहला पृथक कलिंग शिलालेख

“सा मे पजा [।] अथ पजाये इछामि किंति में सवेणा हितसुखेन युजेयू अथ पजाये इछामि किंति मे सवेन हित-सु-खेन युजेयू ति हिदलोगिक-पाललोकिकेण हेवंमेव में इछ सवमुनिसेसु [।]”
— दूसरा पृथक कलिंग शिलालेख

अनुवाद : सब मनुष्य मेरी सन्तान हैं। जिस प्रकार मै अपनी सन्तान के लिए मैं चाहता हूँ कि मेरे द्वारा वह सब प्रकार के इहलौकिक तथा पारलौकिक हित और सुख से युक्त हो, उसी प्रकार मेरी इच्छा सब मनुष्यों के सम्बन्ध में है।
”
यद्यपि अशोक ने बौद्ध धर्म ग्रहण कर लिया था, तथापि उसने किसी दूसरे धर्म व सम्प्रदाय के प्रति अनादर एवं असहिष्णुता प्रदर्शित नहीं की। विभिन्न मतों एवं सम्प्रदायों के प्रति उदारता की अशोक की नीति का पता उसके विभिन्न अभिलेखों से भी लगता है।

12वें अभिलेख में अशोक कहता है,

“ यो हि कोचटि आत्पपासण्डं पूजयति परसासाण्डं व गरहति सवं आत्पपासण्डभतिया किंति आत्पपासण्डं दिपयेम इति सो च पुन तथ करातो आत्पपासण्डं बाढ़तरं उपहनाति [।] त समवायों एव साधु किंति अञमञंस धंमं स्रुणारु च सुसंसेर च [।] एवं हि देवानं पियस इछा किंति सब पासण्डा बहुस्रुता च असु कलाणागमा च असु
–12वा प्रमुख अभिलेख[7]

अनुवाद : मनुष्य को अपने सम्प्रदाय का आदर और दूसरे धर्म की अकारण निन्दा नहीं करना चाहिए। जो कोई अपने सम्प्रदाय के प्रति और उसकी उन्नति की लालसा से दूसरे धर्म की निन्दा करता है वह वस्तुतः अपने सम्प्रदाय की ही बहुत बड़ी हानि करता है। लोग एक-दूसरे के धम्म को सुनें। इससे सभी सम्प्रदाय बहुश्रुत (अधिक ज्ञान वाले) होंगे तथा संसार का कल्याण होगा।[10,11,12]

”
अशोक का यह कथन उसकी सर्वधर्म समभाव की नीति का परिचायक है। यही नीति उसके निम्न कार्यों में भी परिलक्षित होती है[8]-

राज्याभिषेक के 12वें वर्ष अशोक ने बराबर (गया जिला) की पहाड़ियों पर आजीवक सम्प्रदाय के संन्यासियों को निवास हेतु गुफाएँ निर्मित कराकर प्रदान की थीं, जैसे सुदामा गुफा और कर्णचौपर गुफा।
यवन जातिय तुषास्प को अशोक ने काठियावाड़ प्रान्त का गवर्नर नियुक्त किया। तुषास्प ने सुदर्शन झील से नहरें निकलवायीं। सुदर्शन झील का निर्माण चन्द्रगुप्त मौर्य के समय सौराष्ट्र प्रान्त के गवर्नर पुष्यगुप्त ने करवाया था। राज्यतरंगिणी से पता चलता है कि अशोक ने कश्मीर के विजयेश्वर नामक शैव मन्दिर का जीर्णोद्धार कराया था। यहां तक की अशोक अपने अभिलेखों में बौद्ध श्रमाणों के साथ ब्रह्माणों को भी दान देने की बात करते है।
तत इदं भवति दासभतकम्हि सम्यप्रतिपती मातरि पितरा साधु सुनुसा मितसस्तुततिकानं बाम्हणत्रमणानं साधुदान
–11वा प्रमुख अभिलेख
अनुवाद : वहाँ (धर्म में) यह होता है कि दासों व सेवकों के साथ यथोचित आदरपूर्वक व्यवहार किया जाय, माता व पिता की अच्छी प्रकार से सेवा की जाय। मित्रों, सुपरिचितों, एवं बन्धु बान्धवों को, ब्राह्मणें एवं श्रमणों को दान देना अच्छा है ।

अशोक ने इसी प्रकार की भावना अपने सप्तम शिला लेख में भी इस प्रकार की है-
"देवानंप्रियो पियदसिराजा सवत्र इछति सव्र प्रषंड वसेयु सवे हि ते समये भव-शुधि च इछंति जनो चु उचवुच-छंदो उचवुच रगोते सव्रं व एकदेशं व पि कषंति विपुले पि चु दने ग्रस नस्ति समय भव शुधि किट्रञत द्रिढ-भवति निचे पढं"
–सप्तम प्रमुख शिलालेख[9]
अनुवाद : देवानां प्रियदर्शी (सम्राट अशोक) की इच्छा है कि सर्वत्र सभी सम्प्रदाय निवास करें। वे सभी संयम और भाव शुद्धि चाहते हैं परन्तु जन साधारण ऊँच-नीचे कामना वाले और ऊँच-नीच भावना वाले होते हैं। वे या तो सम्पूर्ण (धर्म-पालन) की कामना करते हैं अथवा उसके एक अंश की। जो बहुत दान नहीं कर सकता उसका भी संयम, भावशुद्धि, कृतज्ञता, दृढ़भक्ति नित्य बढ़नी चाहिए।

सभी सम्प्रदायों के कल्याण तथा उनमें धम्म की प्रतिस्थापना के उद्देश्य से धर्म-महाभर्भाव नामक अधिकारियों की नियुक्ति ।
–प्रमुख शिलालेख 5

धर्म से सम्बन्धित उसने "धर्ममंगल", "धर्मदान", "धर्म अनुग्रह आदि की बातें कही हैं। धर्म मंगल के उद्देश्य के विषय में अष्टम शिलालेख में सम्राट् ने इस प्रकार अपने उद्‌गार व्यक्त किये हैं-

" दास भटकम्हि सभ्यप्रतिपति, गु३ नं अपिचति साधु, पाणेसु संयमो साधु, ब्राह्मणसमणानं साधुदानं, एतं च अयं च एतारिसन धम्ममंगल नाम "

| ISSN: 2395-7639 | www.ijmrsetm.com | Impact Factor: 7.802 | A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Journal |

| Volume 11, Issue 6, June 2024 |

–अष्टम प्रमुख शिलालेख

इसी प्रकार शिला अभिलेख[1,2,3] ग्यारहवें में उसने कहा कि :

"नास्ति एताइिसं दानं या रिसं धम्मदान, धम्मसंस्तवो वा धम्म सम्विभागो, धम्म सम्बन्धो व"

– ग्यारहवाँ प्रमुख शिलालेख

अनुवाद : "ऐसा कोई दान नहीं जैसा धर्मदान, ऐसी कोई मित्रता नहीं जैसी धर्म-मित्रता, ऐसी कोई उदारता नहीं, जैसी धर्म उदारता है, ऐसा कोई सम्बन्ध नहीं जैसा धर्म-सम्बन्ध "

सम्राट् का अनुराग सभी धर्मों के प्रति समान था। वह सभी सम्प्रदायों के अनुष्ठानों में स्वयं उपस्थित होकर उनकी समुचित पूजा एवं अभ्यर्थना करता था। छठवें स्तंभलेख और बारहवां प्रमुख शिलालेख में उसने इसी बात को अंकित इस प्रकार किया है-

"सब पाषण्डापि में पूजिता विविधाय पूजाय। ऐचु इयुं अत्तनापच्चुपगमने।

– 12वा प्रमुख शिलालेख[10]

अनुवाद : सभी सम्प्रदाय मेरे द्वारा पूजित हैं, मैं उनकी विविध प्रकार से पूजा करता हूँ किन्तु व्यक्तिगत रूप से उनके पास जाने को अपना मुख्य कर्त्तव्य मानता हूँ।

सब पासण्डा पि मे पूजिता विविधाय पुजाया [।] ए चु इयं अतना पचूपगमने से मे मोख्यमुते [।]

– छठवाँ स्तम्भलेख[11]

अनुवाद : सभी पाषण्ड (पन्थ) भी मेरे द्वारा विविध पूजाओं से पूजित हुए हैं। परन्तु पन्थों के यहाँ आत्म-प्रत्युपगमन अर्थात् स्वयं को जाना मेरे द्वारा मुख्य कर्त्तव्य माना गया है।

विवरणों से यह स्पष्ट है कि अशोक का विश्वास "शुद्ध-धर्म" में था। उसकी यह भी मान्यता थी कि "शुद्धधर्म" के पालन से ही सभी जन का कल्याण हो सकता है। सम्प्रदायवाद से तो हानि ही हानि है। सम्राट् की यही मंगलकामना थी कि प्रजा में धर्माचरण की अभिवृद्धि हो, सभी लोग संयम से रहें तथा दान करें:

इछा हि मे .... बढति विविधे धंम चलने संयमे दान सविभागे ति
-चतुर्थ स्तंभ लेख[12]

अनुवाद : मेरी ऐसी इच्छा है कि.. लोगों में धर्माचरण, संयम और दान वितरण बढ़े।

II. विचार-विमर्श

राजा अशोक का प्रारंभिक जीवन और सत्ता में उत्थान

- अशोक मौर्य राजा बिन्दुसार और उनकी पत्नी रानी धर्मा के पुत्र थे।
- उनका जन्म लगभग 304 ईसा पूर्व हुआ था। उनके दादा चंद्रगुप्त मौर्य थे, जो मौर्य वंश के पहले शासक थे
- बचपन से ही उन्होंने शिक्षा और शस्त्र विद्या में उत्कृष्ट क्षमता दिखाई। उनके युद्ध कौशल से प्रभावित होकर बिंदुसार ने अशोक को अवंती का राज्यपाल नियुक्त किया। धीरे-धीरे, युवा अशोक एक प्रतिभाशाली राजनेता और एक दुर्जेय योद्धा सेनापति बन गया
- मौर्य साम्राज्य के सिंहासन पर अशोक के धम्म के आरोहण के पीछे कई कहानियाँ हैं
- महावंश के अनुसार, जब[4,5] बिन्दुसार बीमार था, तो अशोक राजधानी का नेतृत्व संभालने के लिए उज्जैन से पाटलिपुत्र लौट आया था।
- अशोक ने अपने सबसे बड़े भाई की हत्या कर दी और अपने पिता की मृत्यु के बाद सिंहासन पर बैठा
- शास्त्रों के अनुसार, अशोक ने सुमना सहित अपने 99 सौतेले भाइयों की हत्या की थी।
- दीपवंश के अनुसार, चार वर्ष बाद राज्याभिषेक से पहले उसने अपने सैकड़ों भाइयों का नरसंहार किया था

| ISSN: 2395-7639 | www.ijmrsetm.com | Impact Factor: 7.802 | A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Journal |

| Volume 11, Issue 6, June 2024 |

- वंशपथपकसिनी के अनुसार, एक आजीविक तपस्वी ने अशोक की मां द्वारा देखे गए स्वप्न की व्याख्या के आधार पर नरसंहार की भविष्यवाणी की थी।
- किंवदंती के अनुसार, केवल अशोक के भाई विताशोक को ही बचाया गया था।
- कलिंग युद्ध और राजा का त्याग
- मगध के सम्राट के रूप में अपनी स्थिति सुरक्षित करने के बाद, राजा अशोक ने कलिंग (वर्तमान तटीय उड़ीसा) पर आक्रमण करने की योजना बनाई।
- कलिंग के शिलालेख में कलिंग युद्ध में हुए नरसंहार, निर्वासन और बंदी बनाने के विशाल पैमाने पर प्रकाश डाला गया है
- हालाँकि, यह युद्ध राजा के जीवन में एक महत्वपूर्ण घटना साबित हुई।
- ऐसा कहा जाता है कि राजा अशोक ने युद्ध के मैदान में यात्रा की, मृत्यु और बर्बादी देखी, और उनका हृदय परिवर्तन हो गया। बाद में उन्होंने इसे अपने 13वें शिलालेख में दर्ज किया
- युद्ध में पराजित लोगों को हुई कठिनाइयों से वह इतने अधिक दोषी महसूस करने लगे कि उन्होंने सशस्त्र विजय अभियान त्याग दिया।
- बौद्ध प्रभाव के तहत प्रशासन
- अशोक का शासन केवल अपने आध्यात्मिक परिवर्तन के बाद अपने विषयों के कल्याण से संबंधित था
- विथाशोक, उनके छोटे भाई और भरोसेमंद मंत्रियों के एक समूह ने उनके प्रशासनिक कर्तव्यों में उनका समर्थन किया
- किसी भी नए प्रशासनिक उपाय को लागू करने से पहले, राजा अशोक ने उनकी सलाह ली। उन्होंने आदर्श राजा के चरित्र के लिए अर्थशास्त्र के मानदंडों का पालन किया
- राजा अशोक ने व्यवहार समाहार और दंड समाहार जैसे विधायी परिवर्तन पेश किए, जिसमें स्पष्ट रूप से बताया गया कि उनके नागरिकों को किस तरह की जीवनशैली अपनानी चाहिए। अमात्य या नागरिक अधिकारी सम्राट की विशिष्ट न्यायिक और प्रशासनिक जिम्मेदारियों के प्रभारी थे
- अक्षपटलाध्यक्ष का प्रशासन की समग्र मुद्रा और वित्त पर नियंत्रण था
- खनन और अन्य धातुकर्म गतिविधियाँ अकराध्यक्ष के नियंत्रण में थीं
- कर संग्रह का कार्य शुलकाध्यक्ष का था। पण्याध्यक्ष व्यापार का प्रभारी था।
- कृषि सीताध्यक्ष की जिम्मेदारी थी
- राजा अशोक ने धम्म की अवधारणा विकसित की और सभी को इसका पालन करने के लिए प्रोत्साहित किया
- अशोक का धम्म एक जीवन पद्धति थी। यह सभी लोगों के लिए एक आचार संहिता थी जिसका पालन करना ज़रूरी था। अपने शिलालेखों में उन्होंने अपनी धम्म नीतियों का उल्लेख किया है
- राजा अशोक की धार्मिक नीति: धम्म
- राजा अशोक ने 260 ईसा पूर्व के आसपास बौद्ध धर्म को राज्य धर्म घोषित किया था। उन्होंने धम्म के अभ्यास को अनिवार्य बनाया, जो उनके उदार और सहिष्णु प्रशासन की नींव बन गया। अशोक का धम्म भगवान बुद्ध द्वारा बताए गए दस सिद्धांतों पर आधारित था।
- ये दस सिद्धांत हैं:[2,3,4]

1. अहंकार से बचते हुए उदार होना।
2. उच्च नैतिक मानक को बनाए रखना।
3. प्रजा की भलाई के लिए अपने स्वयं के सुख को एक तरफ रखने के लिए तैयार रहना।
4. सत्यनिष्ठ रहना और पूर्ण निष्ठा बनाए रखना।
5. कोमल और दयालु होना।
6. प्रजा को प्रेरित करने के लिए विनम्र जीवन जीना।
7. सभी प्रकार की घृणा से मुक्त होना।
8. अहिंसा का अभ्यास करना।
9. धैर्य विकसित करना।
10. शांति और सद्भाव बनाने के लिए जनता के दृष्टिकोण का सम्मान करना।

अशोक का धम्म कोई नया धर्म नहीं था। यह राजनीतिक दर्शन का कोई नया रूप भी नहीं था। धर्म संस्कृत में धम्म के लिए इस्तेमाल होने वाला शब्द है।

धम्म एक जीवन पद्धति थी जो आचार संहिता और आदर्शों के एक समूह में निहित थी, जिसका पालन करने की सलाह उन्होंने अपने लोगों को शांति और समृद्धि में रहने के लिए दी थी। धम्म नीतियों में निम्नलिखित शामिल थे:

- अहिंसा और सत्य का पालन करना चाहिए
- दासों और नौकरों के प्रति स्वामियों का व्यवहार मानवीय होना चाहिए
- सभी धार्मिक सम्प्रदायों को सहन किया जाना चाहिए

| ISSN: 2395-7639 | www.ijmrsetm.com | Impact Factor: 7.802 | A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Journal |

| Volume 11, Issue 6, June 2024 |

- संघर्ष के बजाय धर्म विजय को प्राथमिकता दी जाती है
- माता-पिता की आज्ञा का पालन करना चाहिए और उनका सम्मान करना चाहिए, तथा शिक्षकों का आदर करना चाहिए
- ब्राह्मणों और बौद्ध भिक्षुओं का सम्मान किया जाना चाहिए
- मृत्युदंड की सज़ा का उन्मूलन
- पशु बलि और पक्षियों की हत्या निषिद्ध है
- अनुचित अनुष्ठानों और अंधविश्वासी प्रथाओं को हतोत्साहित किया जाता है
- कुएँ और विश्राम गृह बनाना, साथ ही पेड़ लगाना
- मानव एवं पशु स्वास्थ्य देखभाल उपलब्ध कराई जाएगी
- गरीबों और बुजुर्गों की मदद के लिए प्रावधान

उन्होंने 14 शिलालेख जारी करके अशोक के धम्म आदर्शों का प्रचार किया। उन्होंने अपने शासनकाल के दौरान इन सभी शिलालेखों को अपने राज्य में प्रसारित किया। अशोक ने धम्म महामात्रों को जनता को धम्म सिखाने का काम सौंपा। उन्हें दूसरे देशों में भी धम्म का प्रचार करने के लिए तैनात किया गया था।[6,7,8]

अशोक को उनके जन कल्याण कार्यक्रमों के लिए प्राचीन भारत के सबसे बेहतरीन राजाओं में से एक माना जाता है। उन्होंने धम्म का निर्माण किया और अपने विषयों सहित सभी को इसका पालन करने के लिए प्रेरित किया। अशोक का धम्म कोई विशिष्ट धार्मिक विश्वास या प्रथा नहीं थी, न ही यह मनमाने ढंग से तैयार की गई शाही नीति थी। धर्म का संबंध सामान्यीकृत सामाजिक मानदंडों और प्रथाओं से है। अशोक धम्म यूपीएससी यूपीएससी पाठ्यक्रम में शामिल एक महत्वपूर्ण विषय है। इसलिए, प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी करने वाले छात्रों को राजा अशोक द्वारा विकसित धम्म नीतियों को जानना चाहिए।

III. परिणाम

मौर्य वंश के तीसरे शासक सम्राट अशोक भारतीय इतिहास के दीप्तिमान नक्षत्र की तरह है अशोक के इतिहास में ना केवल अपने अभिलेखों के कारण अपितु अपनी धम्म नीति के कारण अति प्रसिद्ध है अशोक के धम के स्त्रोत पर चर्चा की जाए तो यही माना जाता है कि अशोक बौद्ध धर्म से प्रभावित था तथा बौद्ध धर्म की शिक्षाओं का व्यवहारिक रूप ही धम के रूप में पुष्पित व पल्लवित हुआ अशोक ने युद्ध नीति छोड़ धम्म नीति का अनुसरण किया उसने रणविजय के मार्ग को त्याग कर धम विजय की ओर रुख किया अशोक के धम्म में वह सभी अच्छी चीजें शामिल थी जो विभिन्न धर्मों में वर्णित की गई अशोक अपने अभिलेखों में धर्म की परिभाषा और अर्थ देता हुआ कहता है कि अपने माता-पिता गुरुजनों का सम्मान करना अपने दासो से सहानुभूति पूर्ण व्यवहार करना अत्यधिक दान शील दया की प्रवृत्ति को अपनाना यही धम है वर्तमान में भी धम की उतनी ही प्राथमिकता है जितनी अशोक के काल में थी अशोक ने उस राजतंत्र के युग में भी दम नीति का अनुसरण किया तथा 261 ईसा पूर्व कलिंग विजय के पश्चात युद्धों से दूरी बनाकर शांति का संदेश दिया वर्तमान में भी जब विश्व के सभी देश एक दूसरे से कूटनीतिक युद्ध में रत है जब परमाणु रसायन व साइबर वार जैसी बातें सुनने को मिलती है तो ऐसे समय में धम अनुसरण कर विश्वशांति को प्रतिस्थापित किया जा सकता है
अशोक का धम्म किसी एक धार्मिक विश्वास के अंतर्गत नहीं था उसके उद्देश्य व्यापक और नैतिक नियमों के रूप में थे जहां तक उसके व्यक्तिगत धर्म का संबंध है अशोक बौद्ध था । किंतु उसके कभी व्यक्तिगत धार्मिक विचारों को जनता पर लादने का प्रयास नहीं किया । उसके अभिलेखों में कहीं भी हमें बौद्ध धर्म के , चार आर्य सत्य, (अष्टांगिक मार्ग) या निरवाण का उल्लेख नहीं मिलता उसका उद्देश्य तो व्यक्ति का सम्यक नैतिक विकास करना है था इसके लिए उसने लोगों के सम्मुख कुछ ऐसे नैतिक नियमों को रखा जो व्यक्ति के आंतरिक गुणों का प्रकाशन करते हुए उसे सच्चे सुख और शांति की ओर अग्रसर करें यह नैतिक नियम इस प्रकार थे—[9,10,11]

(1) दया (2) सत्य (3) साधुता (4)दान (5) शौच

(6) मार्दव माधुर्य ।

IV. निष्कर्ष

अशोक का धम्म वस्तुतः एक नैतिक संहिता थी जिसका उद्देश्य लोगों में प्रेम, नैतिकता, शांति तथा सामाजिक उत्तरदायित्व की भावना को जगाकर अपने विशाल साम्राज्य में शांति बनाए रखना था। अपने दूसरे स्तंभलेख में अशोक स्वयं प्रश्न करता है-कियं चू धम्में? अपने दूसरे तथा सातवें शिलालेख के माध्यम से वह इसका उत्तर भी देता है-

"अपासिनवे बहुकयाने दयादाने सचे साचये मादवे साधवे च" अर्थात कम पाप करना, कल्याण करना दया-दान करना, सत्य बोलना, पवित्रता से रहना, स्वभाव में मधुरता तथा साधुता बनाए रखना जैसे तत्त्व अशोक के धम्म में शामिल हैं|

| ISSN: 2395-7639 | www.ijmrsetm.com | Impact Factor: 7.802 | A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Journal |

| Volume 11, Issue 6, June 2024 |

धम्म घोष से पूर्व अशोक कलिंग विजय कर चुका था और संपूर्ण भारत में मौर्य साम्राज्य का विस्तार हो चुका था। अशोक का मुख्य लक्ष्य अब अपनी प्रजा के विद्रोह की भावना को कम करना, आसपास के राज्यों को आक्रमण से रोकना तथा शांति बनाए रखना था।

अपनी धम्म नीति के तहत अशोक शांति और अहिंसा को बढ़ावा देता है। इसी क्रम में उसे कलिंग नरसंहार के बाद बार-बार पश्चताप करते हुए बताया गया है। इससे जनता के मन में प्रतिशोध की भावना पर लगाम लगा और विद्रोही चेतना में कमी आई। धम्म नीति से जनता की नैतिकता में वृद्धि हुई और लोक व्यवस्था को बनाए रखना आसान हो गया। साथ ही पड़ोसी राज्यों के साथ धम्म विजय पर बल देने से उस पर आक्रमण का खतरा भी नहीं रहा। इस प्रकार अशोक की धम्म नीति उसके राजनीतिक उद्देश्यों की प्राप्ति में सहायक थी।

किंतु अशोक ने व्यवहारिकता पर बल देते हुए स्वयं को धम्म नीति से बांधा नहीं था। वह राज्य की आवश्यकतानुसार अन्य उपायों का सहारा भी लेता रहा। उदाहरण के लिये शांति पर बल देने के बाद भी उसने अपनी सेना को विघटित नहीं किया। साथ ही वह जनजातियों को धमकी भी देता रहा कि नैतिक व्यवस्था का पालन नहीं करने पर परिणाम बुरे होंगे। उसी प्रकार अहिंसा पर बल देने के बाद भी उसने अपने अधिकारियों को दंड देने का अधिकार प्रदान किया।

स्पष्ट है कि अशोक की राजनीति उसकी धम्म नीति से पूर्णतः बंधी नहीं थी बल्कि वह राज्य की आवश्यकता अनुसार इसका प्रयोग करता रहा।[12]

संदर्भ

1. मिरगंद्र अग्रवाल (2005). शिलालेखों का दर्शन. स्टर्लिंग प्रकाशन Pvt. Ltd. पृ॰ 42. आई॰ऍस॰बी॰ऍन॰ 9781845572808.
2. ↑ "धर्म". बुद्धनेट. मूल से 7 सितम्बर 2013 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 30 अगस्त 2013.
3. ↑ विपुल सिंह (सितम्बर 2009). लॉन्गमैन विस्टा 6. पियर्सन एजुकेशन इंडिया, 2009. पृ॰ 46. आई॰ऍस॰बी॰ऍन॰ 9788131729083. अभिगमन तिथि 30 August 2013.
4. ↑ Tripathi, Havaldar (1960). Bauddhdharma And Bihar. पृ॰ 324.
5. ↑ संदर्भ: "भारत का अतीत" पृ॰.113, बुर्जोर अवारी, रूटलेज, ISBN 0-415-35615-6
6. ↑ Sahaya, Shiv Swarup (2008). Bharatiya Puralekhon Ka Adhyayan Studies In Ancient Indian Inscriptions. Motilal Banarsidass Publishe. पपृ॰ 100–115. आई॰ऍस॰बी॰ऍन॰ 978-81-208-2204-7.
7. ↑ Baudha Dharm Darshan Dharma Nirapekshata Of Ramesh Kumar Dwivedi Sampurnananda Sanskrit University. पृ॰ 76.
8. ↑ Shrivastava, Dr Brajesh Kumar (2023-11-25). NEP Bharat Ka Rajnitik Itihas भारत का राजनीतिक इतिहास Political History Of India [B. A. Ist Sem (Prachin Itihas) (Major & Minor)]. SBPD Publications. पृ॰ 75.
9. ↑ Ashoka's Inscriptions /अशोक कालीन अभिलेख. 2021-09-26. पृ॰ 41.
10. ↑ Vishwa Vidyalaya Prakashan, Varanasi (2015). Prachina Bharata By Dr. Rajbali Pandey (Revised And Expanded Edition). पृ॰ 211. आई॰ऍस॰बी॰ऍन॰ 978-93-5146-099-2.
11. ↑ Rajasthan Hindi Granth Academy, Jaipur. Prachin Bharatiya Abhilekh Sangrah Volume 1. पृ॰ 135.
12. ↑ Pandey Rajbali. Ashok Ke Abhilekh. पृ॰ 143.

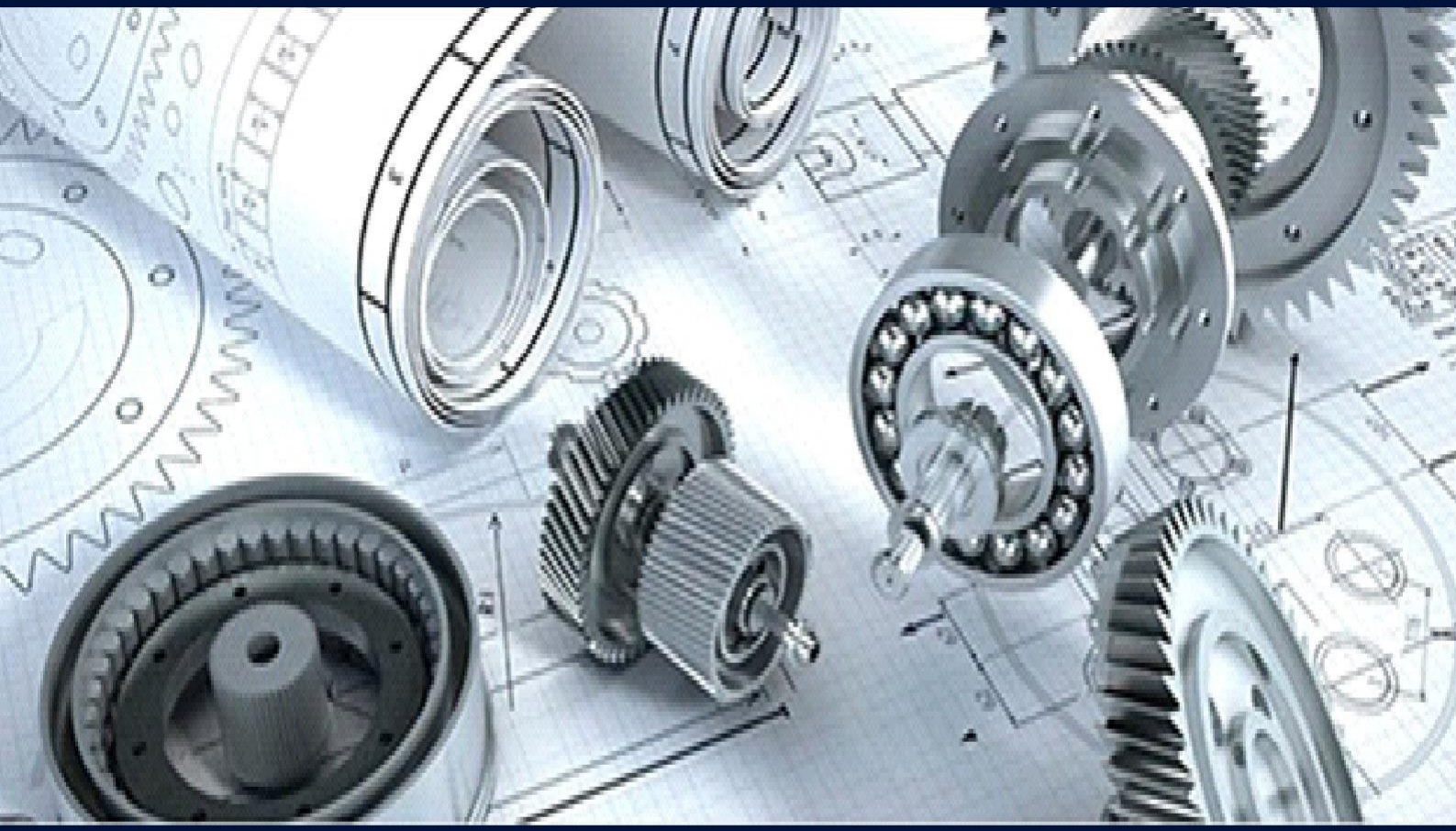

INTERNATIONAL STANDARD SERIAL NUMBER INDIA

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH

IN SCIENCE, ENGINEERING, TECHNOLOGY AND MANAGEMENT

+91 99405 72462 +91 63819 07438 ijmrsetm@gmail.com